International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(3): 31-34
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 15-04-2026
Accepted: 04-05-2026
Publish : 05-05-2026

Dr. Mou Goswami
Assistant Professor,
Dept. of Education,
Central Sanskrit University,
Shri Sadashiv Campus,
Puri-752001, Odisha

Correspondence:
Dr. Mou Goswami
Assistant Professor,
Dept. of Education,
Central Sanskrit University,
Shri Sadashiv Campus,
Puri-752001, Odisha

डिजिटल समाज और मानवीय मूल्य: एआई युग में समग्र मानवतावाद का पुनर्कल्पन

Dr. Mou Goswami

सारांश:

वर्तमान समय में डिजिटल तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों को प्रभावित कर रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासन, अर्थव्यवस्था और सामाजिक संबंधों में एआई आधारित प्रणालियाँ कार्यकुशलता, गति और सटीकता प्रदान कर रही हैं। इसके बावजूद यह चिंता भी बढ़ रही है कि अत्यधिक तकनीकी निर्भरता के कारण मानवीय मूल्य जैसे करुणा, नैतिकता, समानता और उत्तरदायित्व कमजोर न पड़ जाएँ। ऐसे समय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित समग्र मानवतावाद की अवधारणा विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाती है।

समग्र मानवतावाद मनुष्य को केवल आर्थिक या भौतिक इकाई नहीं मानता, बल्कि शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित स्वरूप मानता है। यह विचारधारा मानव के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। एआई के वर्तमान युग में यह आवश्यक हो गया है कि तकनीकी विकास मानव-केंद्रित और मूल्य-आधारित हो। उदाहरण के लिए, शिक्षा में एआई आधारित तकनीक विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता का विश्लेषण कर सकती है, लेकिन शिक्षक की भूमिका इसलिए महत्वपूर्ण रहती है क्योंकि वही नैतिक मूल्यों, संवेदनशीलता और प्रेरणा का विकास करता है।

अतः यह आवश्यक है कि तकनीकी प्रगति को मानवीय मूल्यों के साथ संतुलित किया जाए। एआई तभी मानव समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होगा जब उसका उपयोग मानव कल्याण, सामाजिक न्याय और नैतिकता के आधार पर किया जाए।

मुख्य शब्द: एआई, डिजिटल समाज, मानवीय मूल्य, समग्र मानवतावाद

प्रस्तावना :

वर्तमान युग को डिजिटल क्रांति और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का युग कहा जा सकता है। आज मानव जीवन का शायद ही कोई क्षेत्र ऐसा बचा हो जो डिजिटल तकनीक से प्रभावित न हुआ हो। संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, प्रशासन, न्याय व्यवस्था और यहाँ तक कि मानवीय संबंध भी तेजी से डिजिटल माध्यमों पर निर्भर होते जा रहे हैं। एआई आधारित प्रणालियाँ मानव की सोच, निर्णय-प्रक्रिया और कार्य-क्षमता को न केवल सहयोग दे रही हैं, बल्कि कई क्षेत्रों में उसका स्थान भी लेती जा रही हैं। इस परिवर्तन ने मानव जीवन को अधिक सुविधाजनक, तीव्र और प्रभावी बनाया है, परंतु इसके साथ-साथ कई गंभीर नैतिक और मानवीय प्रश्न भी उत्पन्न हुए हैं।

डिजिटल समाज में जहाँ एक ओर ज्ञान और सूचना की अभूतपूर्व उपलब्धता है, वहीं दूसरी ओर संवेदनशीलता, सहानुभूति, नैतिकता और मानवीय मूल्यों का क्षरण दिखाई देने लगा है। निजता का संकट, डेटा का व्यावसायीकरण, एल्गोरिदमिक पक्षपात, आभासी संबंधों की बढ़ती प्रधानता तथा मानव का मशीन पर बढ़ता आश्रय- ये सभी ऐसे मुद्दे हैं जो यह सोचने पर विवश करते हैं कि क्या तकनीकी प्रगति अपने साथ मानवता को भी आगे बढ़ा रही है

या नहीं। यदि विकास केवल तकनीक-केंद्रित रह गया और मानव-केंद्रित नहीं रहा, तो समाज में असंतुलन उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इसी संदर्भ में समग्र मानवतावाद (Integral Humanism) की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित यह दर्शन मनुष्य को केवल आर्थिक या तकनीकी इकाई नहीं मानता, बल्कि उसे शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित स्वरूप स्वीकार करता है। समग्र मानवतावाद का मूल विचार यह है कि- समाज और विकास की सभी प्रणालियाँ मनुष्य की सम्पूर्ण आवश्यकताओं-भौतिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक-को ध्यान में रखकर निर्मित होनी चाहिए।

एआई युग में समग्र मानवतावाद का पुनर्कल्पन इसलिए आवश्यक है क्योंकि आज तकनीक अभूतपूर्व शक्ति प्राप्त कर चुकी है। यदि यह शक्ति मूल्यविहीन हो जाए, तो वह मानव के लिए वरदान की जगह अभिशाप बन सकती है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि डिजिटल समाज का निर्माण मानवीय गरिमा, नैतिकता, समानता और सह-अस्तित्व के मूल्यों पर आधारित हो। समग्र मानवतावाद हमें यह दिशा प्रदान करता है कि किस प्रकार तकनीकी उन्नति और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित कर एक ऐसे समाज की कल्पना की जाए, जहाँ एआई मानवता की सेवा में हो, न कि मानव एआई का दास बन जाए।

डिजिटल समाज की अवधारणा:

डिजिटल समाज वह समाज है जिसमें मानव जीवन की लगभग सभी गतिविधियाँ सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी पर आधारित हो जाती हैं। इस समाज में कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल फोन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म केवल साधन नहीं रह जाते, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना को दिशा देने वाली शक्तियाँ बन जाते हैं। व्यक्ति का दैनिक जीवन संवाद, अध्ययन, कार्य, लेन-देन और मनोरंजन तेजी से डिजिटल माध्यमों के माध्यम से संचालित होने लगता है, जिससे समय और दूरी की पारंपरिक सीमाएँ लगभग समाप्त हो जाती हैं।

डिजिटल समाज की अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि सूचना अब शक्ति का प्रमुख स्रोत बन चुकी है। जहाँ औद्योगिक समाज में उत्पादन के साधन केंद्र में थे, वहीं डिजिटल समाज में डेटा, सूचना और ज्ञान सामाजिक प्रगति के मुख्य आधार बन गए हैं। सूचनाओं का संग्रह, विश्लेषण और त्वरित प्रसार समाज को अधिक गतिशील, पारदर्शी और संगठित बनाता है। परिणामस्वरूप निर्णय-प्रक्रिया अधिक वैज्ञानिक और तर्कसंगत दिखाई देती है, परंतु कई बार यह मानवीय अनुभूति से दूर भी हो जाती है।

डिजिटल समाज में व्यक्ति की पहचान : डिजिटल समाज में व्यक्ति की पहचान भी एक नया रूप ग्रहण कर लेती है। अब व्यक्ति केवल अपने भौतिक अस्तित्व से नहीं, बल्कि अपनी डिजिटल पहचान जैसे सोशल मीडिया प्रोफाइल, ई-मेल, डिजिटल दस्तावेज़ और ऑनलाइन गतिविधियों से भी पहचाना जाता है। यह आभासी पहचान व्यक्ति के सामाजिक संबंधों, प्रतिष्ठा और प्रभाव को निर्धारित करने लगती है। इससे सामाजिक सहभागिता बढ़ती है, किंतु निजता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता से जुड़े प्रश्न भी गंभीर रूप से उभरते हैं।

आर्थिक दृष्टि से डिजिटल समाज : आर्थिक दृष्टि से डिजिटल समाज एक डिजिटल अर्थव्यवस्था को जन्म देता है, जहाँ ऑनलाइन व्यापार, डिजिटल भुगतान, ई-कॉमर्स और फिनटेक जैसी व्यवस्थाएँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं। इससे आर्थिक लेन-देन सरल, तेज और अधिक पारदर्शी हो जाता है। साथ ही रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होते हैं, परंतु परंपरागत रोजगार के स्वरूप में परिवर्तन और असमानता की समस्या भी सामने आती है।

शासन और प्रशासन के क्षेत्र में डिजिटल समाज : शासन और प्रशासन के क्षेत्र में डिजिटल समाज ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देता है। सरकारी सेवाएँ ऑनलाइन उपलब्ध होने से नागरिकों और शासन के बीच दूरी कम होती है तथा पारदर्शिता और उत्तरदायित्व में वृद्धि होती है। शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में भी डिजिटल तकनीक पहुँच को व्यापक बनाती है, किंतु तकनीकी संसाधनों की असमान उपलब्धता के कारण डिजिटल विभाजन की चुनौती उत्पन्न होती है। इस प्रकार डिजिटल समाज एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था है जो मानव जीवन को अधिक सुविधाजनक, तीव्र और प्रभावी बनाती है, परंतु साथ ही मानवीय संबंधों, नैतिक मूल्यों और सामाजिक संतुलन के समक्ष नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है। इसलिए डिजिटल समाज की अवधारणा को समझते समय आवश्यक है कि तकनीकी प्रगति के साथ-साथ मानव-केंद्रित दृष्टिकोण और मूल्य-बोध को भी समान महत्व दिया जाए।

भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार मानवीय मूल्य:

भारतीय ज्ञान परंपरा में मानवीय मूल्य किसी बाहरी नियम या कानून से नहीं, बल्कि जीवन की आंतरिक चेतना से उत्पन्न माने गए हैं। यहाँ मनुष्य को केवल सामाजिक या आर्थिक प्राणी नहीं, बल्कि एक धार्मिक (कर्तव्यनिष्ठ) और नैतिक सत्ता के रूप में देखा गया है। वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत, बौद्ध और जैन दर्शन सभी भारतीय चिंतन धाराओं में मानवीय मूल्यों को जीवन का आधार माना गया है। भारतीय दृष्टि में जीवन का उद्देश्य केवल सुख-सुविधा नहीं, बल्कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के संतुलन के माध्यम से पूर्णता प्राप्त करना है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में धर्म का अर्थ संकीर्ण धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि वह नैतिक व्यवस्था है जो व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच सामंजस्य बनाए रखती है। "धर्मो रक्षति रक्षितः" का भाव यह सिखाता है कि यदि मनुष्य धर्म-अर्थात् सत्य, न्याय और कर्तव्य-की रक्षा करता है, तो वही धर्म उसकी रक्षा करता है। उदाहरण के रूप में राजा हरिश्चंद्र का सत्य के प्रति अडिग रहना यह दर्शाता है कि नैतिक मूल्य कठिन परिस्थितियों में भी मनुष्य को ऊँचा बनाते हैं।

सत्य और अहिंसा भारतीय मानवीय मूल्यों के केंद्रीय स्तंभ हैं। उपनिषदों का उद्घोष “सत्यमेव जयते” सत्य को सर्वोच्च मूल्य घोषित करता है, जबकि महात्मा बुद्ध और महावीर ने अहिंसा को जीवन-पद्धति के रूप में स्थापित किया। अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा से बचना नहीं, बल्कि विचार, वाणी और कर्म तीनों में करुणा और संयम बनाए रखना है। यही कारण है कि भारतीय परंपरा में करुणा को शक्ति माना गया है, कमजोरी नहीं।

भारतीय ज्ञान परंपरा करुणा और सेवा को मानवता की पहचान मानती है। “नर सेवा ही नारायण सेवा” का भाव यह सिखाता है कि मनुष्य की सेवा ही ईश्वर की सच्ची उपासना है। उदाहरणस्वरूप, गुरुकुल परंपरा में गुरु शिष्य को केवल विद्या ही नहीं देता था, बल्कि सेवा, विनम्रता और अनुशासन का संस्कार भी प्रदान करता था। यह शिक्षा मनुष्य को स्वार्थ से ऊपर उठाकर समाजोन्मुख बनाती थी।

वसुधैव कुटुम्बकम् भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अत्यंत उदात्त मानवीय मूल्य है, जिसका अर्थ है-संपूर्ण विश्व एक परिवार है। यह विचार मनुष्य को जाति, धर्म, राष्ट्र और भाषा की सीमाओं से ऊपर उठकर समस्त मानवता और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराता है। आज के वैश्विक और डिजिटल युग में यह मूल्य पर्यावरण संरक्षण, वैश्विक शांति और सह-अस्तित्व के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

भारतीय परंपरा में संयम और संतुलन को भी मानवीय मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है। गीता का कर्मयोग यह सिखाता है कि मनुष्य को फल की आसक्ति छोड़े बिना कर्म करना चाहिए। यह दृष्टि व्यक्ति को न तो भोगवादी बनाती है और न ही पलायनवादी, बल्कि जीवन में संतुलन और मानसिक शांति प्रदान करती है।

मानवीय मूल्य और एआई युग:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास मानव इतिहास में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। आज एआई शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, प्रशासन और उद्योग जैसे क्षेत्रों में व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है। एआई की सबसे बड़ी विशेषता इसकी गति और सटीकता है, लेकिन इसके बावजूद इसमें मानवीय संवेदना का अभाव होता है।

मानवीय मूल्य जैसे करुणा, नैतिकता, न्याय और समानता मनुष्य को मशीन से अलग बनाते हैं। उदाहरण के लिए, एआई किसी रोग की पहचान कर सकता है, लेकिन रोगी की भावनात्मक स्थिति और मानसिक पीड़ा को पूरी तरह नहीं समझ सकता। इसलिए चिकित्सा क्षेत्र में तकनीक के साथ मानवीय संवेदना भी आवश्यक है।

एआई युग में न्याय और निष्पक्षता भी महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। कई बार एआई आधारित प्रणालियाँ पक्षपातपूर्ण डेटा पर आधारित होती हैं, जिससे उनके निर्णय भी पक्षपातपूर्ण हो सकते हैं। यदि किसी एआई प्रणाली को गलत या सीमित जानकारी पर प्रशिक्षित किया जाए, तो वह सामाजिक असमानता को बढ़ा सकती है। इसलिए एआई के उपयोग में नैतिक निगरानी आवश्यक है।

निजता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता भी एआई युग की बड़ी चुनौतियाँ हैं। आज सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म लोगों की व्यक्तिगत जानकारी एकत्र करते हैं। यदि इन जानकारियों का दुरुपयोग हो, तो यह व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्रता के लिए खतरा बन सकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में एआई विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को आसान बना रहा है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म छात्रों की क्षमता के अनुसार अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराते हैं। लेकिन शिक्षा केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य नैतिकता, संवेदनशीलता और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास भी है, जो केवल तकनीक से संभव नहीं है।

इसी प्रकार सामाजिक संबंधों में भी डिजिटल तकनीक का प्रभाव दिखाई देता है। सोशल मीडिया ने संचार को आसान बनाया है, लेकिन इसके कारण आभासी संबंधों की प्रवृत्ति बढ़ी है। कई बार लोग वास्तविक सामाजिक संबंधों से दूर होते जा रहे हैं।

इसलिए एआई युग में यह आवश्यक है कि तकनीकी प्रगति को मानवीय मूल्यों के साथ संतुलित किया जाए। तकनीक मानव का सहायक बने, उसका विकल्प नहीं।

समग्र मानवतावाद के मूल अवधारणा:

समग्र मानवतावाद भारतीय चिंतन परंपरा से विकसित एक ऐसी जीवन-दृष्टि है, जो मनुष्य को केवल आर्थिक प्राणी या उपभोक्ता मानने के बजाय उसे एक पूर्ण और समन्वित व्यक्तित्व के रूप में देखती है। यह विचारधारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित की गई, जिसका मूल उद्देश्य ऐसा सामाजिक दर्शन प्रस्तुत करना था जो पश्चिमी व्यक्तिवाद और साम्यवादी भौतिकवाद-दोनों की सीमाओं से मुक्त हो। समग्र मानवतावाद यह मानता है कि समाज की सभी व्यवस्थाओं का केंद्र मनुष्य होना चाहिए, न कि धन, मशीन या सत्ता।

यह दर्शन समाज को भी एक जीवंत इकाई मानता है, न कि केवल व्यक्तियों का यांत्रिक समूह। जिस प्रकार मानव शरीर के सभी अंग मिलकर कार्य करते हैं, उसी प्रकार समाज के विभिन्न वर्ग, संस्थाएँ और व्यक्ति परस्पर सहयोग से समाज को स्वस्थ बनाते हैं। इस दृष्टि से समग्र मानवतावाद सह-अस्तित्व, सहयोग और सामूहिक कल्याण को सामाजिक जीवन का आधार मानता है, न कि अंधी प्रतिस्पर्धा को।

समग्र मानवतावाद की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसका मूल्य-आधारित विकास मॉडल है। यह केवल आर्थिक वृद्धि या उत्पादन को विकास का मापदंड नहीं मानता, बल्कि यह पूछता है कि क्या यह विकास मानव गरिमा, नैतिकता और सामाजिक न्याय को बढ़ा रहा है या नहीं। इसके अनुसार तकनीक, विज्ञान और अर्थव्यवस्था सभी मानव के साधन हैं, साध्य नहीं। यदि साधन ही साध्य बन जाएँ, तो मानवता संकट में पड़ जाती है।

रोचक रूप में कहा जाए तो समग्र मानवतावाद हमें यह सिखाता है कि मनुष्य मशीन नहीं है और समाज कोई फैक्ट्री नहीं। जिस प्रकार संगीत में सुर, ताल और लय का संतुलन आवश्यक होता है, उसी प्रकार जीवन में भौतिक सुख, मानसिक शांति, बौद्धिक विवेक और आत्मिक संतोष-इन सभी का संतुलन ही सच्चा विकास है। यही संतुलन समग्र मानवतावाद की आत्मा है।

आज के डिजिटल और एआई युग में समग्र मानवतावाद और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। यह हमें चेतावनी देता है कि यदि तकनीक मानव मूल्यों से कट गई, तो वह मानव को नियंत्रित करने लगेगी। समग्र मानवतावाद इसलिए एक ऐसा मार्गदर्शक दर्शन है, जो आधुनिकता और परंपरा, विज्ञान और नैतिकता, प्रगति और मानवता-इन सभी के बीच सार्थक सामंजस्य स्थापित करता है।

एआई युग में समग्र मानवतावाद का पुनर्कल्पन :

पुनर्कल्पन की दृष्टि से एआई युग में समग्र मानवतावाद का पुनर्कल्पन का अर्थ केवल यह नहीं है कि हम पुरानी मानवीय अवधारणाओं को नई तकनीक पर लागू कर दें, बल्कि यह है कि हम विकास की पूरी सोच को मानव-केंद्रित दृष्टि से फिर से गढ़ें। पुनर्कल्पन का मूल प्रश्न यह है, जब मशीनें सोचने, सीखने और निर्णय लेने लगी हैं, तब मनुष्य की भूमिका क्या होनी चाहिए? समग्र मानवतावाद इसका उत्तर देता है कि मनुष्य नियंत्रक, मार्गदर्शक और नैतिक विवेक के रूप में केंद्र में रहेगा।

पुनर्कल्पन की सोच के अनुसार एआई को मनुष्य का विकल्प नहीं, बल्कि मनुष्य के अपूर्ण पक्षों का पूरक माना जाता है। इस पुनर्कल्पन में विकास का मापदंड भी बदल जाता है। सफलता अब केवल यह नहीं है कि एआई कितने निर्णय ले सकता है, बल्कि यह है कि उन निर्णयों से मानव गरिमा कितनी सुरक्षित रहती है। समग्र मानवतावाद की पुनर्कल्पित दृष्टि यह मानती है कि यदि कोई एआई प्रणाली अत्यंत कुशल है, पर वह मनुष्य को असहाय, भयभीत या निर्भर बना देती है, तो वह असफल विकास है। सच्ची सफलता तब है, जब तकनीक मनुष्य को अधिक आत्मनिर्भर, विवेकशील और सहृदय बनाए।

पुनर्कल्पन की प्रक्रिया में समाज को भी एक जीवंत इकाई के रूप में फिर से देखा जाता है। एआई का विकास कुछ चुनिंदा वर्गों तक सीमित न रहकर, समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे-यह पुनर्कल्पन की अनिवार्य शर्त है। यहाँ एआई को “सत्ता का साधन” नहीं, बल्कि “सेवा का माध्यम” माना जाता है। इस सोच में तकनीक का उद्देश्य नियंत्रण नहीं, कल्याण होता है।

इस प्रकार, एआई युग में समग्र मानवतावाद का पुनर्कल्पन हमें यह सिखाता है कि भविष्य केवल स्मार्ट मशीनों का नहीं, बल्कि सजग मनुष्यों का होगा। जब एआई की बुद्धि को मानवीय विवेक और नैतिकता की दिशा मिलती है, तब तकनीकी प्रगति मानवता के विरुद्ध नहीं, बल्कि उसके उत्कर्ष का साधन बन जाती है। यही पुनर्कल्पन समग्र मानवतावाद को आज के युग में जीवंत और प्रासंगिक बनाता है।

निष्कर्ष:

डिजिटल समाज और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का युग मानव सभ्यता के लिए नए अवसर और चुनौतियाँ दोनों लेकर आया है। तकनीक ने जीवन को अधिक सुविधाजनक, तेज़ और प्रभावी बनाया है, लेकिन इसके साथ मानवीय संवेदनाओं, नैतिकता और सामाजिक संतुलन के समक्ष नई समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं।

समग्र मानवतावाद इस संदर्भ में एक संतुलित और मानव-केंद्रित दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य केवल उपभोक्ता या डेटा नहीं, बल्कि शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित स्वरूप है। इसलिए विकास की प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जो मानव के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करे।

भारतीय ज्ञान परंपरा से प्रेरित समग्र मानवतावाद यह सिखाता है कि तकनीक मानव का साधन होनी चाहिए, उसका स्वामी नहीं। एआई का उद्देश्य मानव जीवन को बेहतर बनाना और समाज में न्याय, समानता तथा संवेदनशीलता को बढ़ावा देना होना चाहिए। अतः एआई युग में तकनीकी प्रगति तभी सार्थक होगी जब वह मानवीय मूल्यों, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ संतुलित हो। डिजिटल समाज का भविष्य तभी सुरक्षित और सकारात्मक होगा जब तकनीक और मानवता के बीच सामंजस्य स्थापित किया जाएगा।

References:

- Dharmalingam, B. (2024). Revisiting Deendayal Upadhyaya: Integral Humanism as a framework. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.5157
- Divakaran, A., Sridhar, A., & Srinivasan, R. (2022). Broadening AI ethics narratives. arXiv. https://doi.org-/10.48550/arXiv.2204.03789
- Kumar, R. S., & Rajeswari, A. (2025). Human values in the design of intelligent systems. International Journal of Multidisciplinary Humanities and Social Sciences. https://doi.org/10.64137/31079385/IJMHSS-V1I1P102
- Pandey, A. (2020). Deendayal Upadhyay integral humanism (दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानवतावाद). Journal of the Oriental Institute, 69(3), 78–84. https://doi.org/10.8224/journaloi.v69i3.938
- Sharma, S. K. (2021). पंडित दीनदयाल उपाध्यायः व्यक्तित्व एवं कृतित्व. Anu Books.
- Sharma, S. K. (2025). Deendayal Upadhyaya’s integral humanism and the Indian knowledge system. Stallion Journal, 4(5), 87–93. https://doi.org/10.55544/sjm-ars.4.5.13
- Upadhyay, D. (2015). एकात्म मानवतावाद. Prabhat Prakashan.
- Vats, H. (2007). एकात्म मानववादी राष्ट्रनायक पं. दीनदयाल उपाध्याय. Saraswati Books.